14

# स्वच्छता से सरोकार

*रमेश कुमार**

स्वच्छ भारत अभियान की गूँज आज सर्वत्र सुनने को मिल रही है। सरकारी दफ़्तर से लेकर महानगरपालिका तक, चारों ओर स्वच्छता से संबंधित प्रयास किए जा रहे हैं। कुछ लोग प्रत्यक्ष रूप से इस अभियान का हिस्सा बन रहे हैं, तो कुछ लोग अप्रत्यक्ष रूप से। आशय सभी का एक है— स्वच्छ भारत की परिकल्पना को साकार किया जाए। विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में भी स्वच्छता अभियान बड़े व्यापक पैमाने पर चलाए जा रहे हैं। एक अच्छी सोच को साकार करने के लिए देश ने गति पकड़ी है। ऐसी स्थिति में हमारे प्राथमिक विद्यालय इससे अछूते कैसे रह सकते हैं। भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी ने 2 अक्तूबर 2014 को महात्मा गाँधी की 145वीं जयंती पर 'स्वच्छ भारत अभियान' का शुभारंभ किया।

अभियान के आरंभ से ही नन्हें बच्चों की ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है, क्योंकि कल का भारत इन्हीं बच्चों के रूप में तैयार हो रहा है। वास्तव में भारत के प्राथमिक विद्यालयों में ऐसे ही स्वच्छता के ब्राँड अंबेसडरों का नव-निर्माण हो रहा है। आकर्षक तब लगता है, जब स्वच्छता के शब्दों से ये नव-निहाल अपना नाता जोड़ लेते हैं। शायद इनकी बात समाज में सबसे ज़्यादा सुनी जाती है। एक बच्चा यदि स्वच्छता को अपना ले तो पूरा परिवार उसके पीछे खड़ा हो जाता है, क्योंकि इसके पीछे समाज के बड़े बुज़ुर्गों की सोच है कि हमने तो जी लिया, अब आगे इन्हें जीना है, इसलिए वातावरण को स्वच्छ रखना ही होगा। चलिए समाज ने भी बहुत हद तक स्वच्छता को अंगीकृत कर लिया है। ऐसा ही एक उदाहरण मैं दूँगा, एक बार बस पकड़ने के लिए मैं एक बस स्टैंड पर खड़ा था। बस आने का इंतज़ार कर रहा था। परंतु बस जाम की वजह से समय पर नहीं आ रही थी। मैं स्टैंड के किनारे खड़ा होकर इंतज़ार कर रहा था, इतने में एक सज्जन पान खाते हुए आए , उन्होंने बस स्टैंड पर ही दो-तीन जगह पान की पीके फेंक दी। मैंने विनम्रता से उनके पास जाकर कहा भाई साहब ये पीकें आपको यहाँ अच्छी लग रही हैं, यहाँ रोज़ हज़ारों मुसाफ़िर आते हैं, इसे गंदा ना करो। उन्हें बात समझ में आ गई, मुझसे बोले कि गलती हो गई अब नहीं होगा।

वास्तव में स्वच्छता सभी को पसंद है, पर दूसरों की शर्त पर। दूसरे स्वच्छ रखें तो अच्छा, परंतु हम स्वच्छता में खुद भागीदार नहीं रह सकते। अच्छे ढंग से व्यवस्थित पार्क, गार्डन, उपवन, सबको अच्छे

**सहायक प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन. सी. ई. आर. टी, नयी दिल्ली 110016

लगते हैं, परंतु शर्त है कि जिसके पास उसे साफ़ करने का अधिकारिक हक है, उसके द्वारा साफ़ किया जाए, यह सोच गलत है। हम (माली) उस कर्मी पर निर्भर हैं कि वह साफ़ रखे। परंतु भारत के नागरिक के रूप में हमारी भी कुछ ज़िम्मेदारी है। हमें भी इसे स्वच्छ रखने में उतना ही योगदान देना चाहिए, जितना उन कर्मियों ने दिया है। यह हम सभी की सामूहिक ज़िम्मेदारी है।

स्कूल के विषय में भी मैं बात करूँ, तो अपना एक अनुभव पाठकों से जोड़ना चाहता हूँ। एक बार एक विद्यालय में मैं शोध कार्य हेतु गया था। अध्यापक होने के नाते अपना शिक्षण के प्रति जुड़ाव छिपा नहीं पाया और हेड मास्टर साहब से अनुमति मिलने पर कक्षा में प्रवेश किया। मैंने देखा छात्र मेज़ पर बैठे हैं एवं डेस्क पर स्याही आदि के बहुत सारे धब्बे गिरे हुए थे, कईयों ने उस पर बहुत कुछ लिख दिया था। कक्षा में प्रवेश करते ही हमारा ध्यान सबसे पहले मेज़ की गंदगी की ओर गया। मैंने बड़े ही प्यार से बच्चों को विश्वास में लेकर उनके अपनी-अपनी मेज़ों की सफ़ाई से शुरुआत कराई। मैं चाहता था कि बच्चों में इस बात की समझ बने कि यह विद्यालय मेरा है, इस विद्यालय की हर चीज़ मेरी है, हमें अपने चीज़ को उसी प्रकार गंदा नहीं करना है, जैसे हम अपने घर को गंदा नहीं करते हैं। बच्चों से संवाद एवं जुड़ाव दोनों ही बनाना आवश्यक है। क्योंकि आप की बातों को समझने के लिए उन्हें भी अपनी तर्क की कसौटी पर उसे कसना होता है। अत: बच्चों ने जमकर मुझसे सवाल किए, सवाल मन को झकझोर देने वाले थे। हमारे पास में गंदगी क्यों होती है? लोग घर के पास कूड़ा क्यों फेंक देते हैं? वास्तव में ये सभी सवाल इस बात पर मना करने के लिए एक दिशा देते हैं कि यह देश किसका, हम नागरिक किसके, सरकार किस की। वास्तव में देखा जाए तो अधिकांश लोगों ने एक समझ बना ली है कि स्वच्छता सरकार की ज़िम्मेदारी है। अत: सरकार को इससे निपटना चाहिए। पर अंतर्मन से पूछिए कि बिना आपके सहयोग से यह सरकार बनेगी या चल पाएगी? नहीं, हम सब सरकार के हिस्से हैं। सरकार हम से ही है। हमारा दायित्व है अपने पास-पड़ोस को स्वच्छ रखना। बच्चों में यदि आरंभिक स्तर से ही स्वच्छता का बीजारोपण किया जाए तो कल के नागरिकों के रूप में हमारे पास प्रबुद्ध वर्ग की संख्या अधिक होगी, जिन्होंने स्वच्छता को न सिर्फ़ स्वीकार किया है, बल्कि इसे अंगीभूत भी किया है।

विद्यालय में स्वच्छता एक प्रयोग है, जिसे हर अध्यापक अपने स्तर पर बालकों के साथ जुड़कर कर सकता है। चाहे विद्यालय के परिसर को स्वच्छ एवं आकर्षक बनाने का सुझाव हो अथवा उसकी पूरी रूपरेखा गढ़नी हो। बालकों को उसका हिस्सा बनाना चाहिए एवं प्रत्येक बालक-बालिकाओं को प्रेरित कर इसमें उनका योगदान सुनिश्चित करना चाहिए। बच्चे भी इस अभियान का हिस्सा होकर आनंद महसूस करेंगे, क्योंकि स्वच्छ एवं बढ़ता भारत हम सब के हित में है। कुछ अध्यापक बच्चों के साथ ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को भी जागरूक बना सकते हैं। एन.सी.ई.आर.टी ने रीडिंग सैल के मथुरा प्रोजेक्ट में ग्रामीण बालकों एवं अभिभावकों में पठन के प्रति जागरूकता फ़ैलाने के लिए स्थानीय



Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 101 5/26/2017 9:27:09 AM

बोलचाल की भाषा में ही कुछ गीत रचे एवं बालकों के साथ नुक्कड़ नाटकों का मंचन किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि निश्चित दिन बाल पुस्तक मेले में हज़ारों की संख्या में अभिभावक अपने बच्चों के साथ आए। कहने का आशय है कि ग्रामीण जनता तक अपने अभियान की पैठ बनाने के लिए हमें इन्हीं नन्हें कलाकारों, बालकों पर आश्रित रहना पड़ेगा। ये बालक हमारे ब्राँड अंबेसडर हैं, स्वच्छ भारत का अभियान इन्हीं के द्वारा जन-जन तक जाएगा। सरकारों को भी इसे एक मुहिम की तर्ज़ पर अपनाना होगा। तभी हम स्वच्छ भारत की परिकल्पना साकार कर पाएँगे।



Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 102 5/26/2017 9:27:10 AM